CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

Reported deaths due to Small Pox epidemic in Bihar, Assam and West Bengal

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : उप-सभापति जी, मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की ओर स्वास्थ्य मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं। चेचक के कारण बिहार, असम और पश्चिम बंगाल के राज्यों में हजारों व्यक्तियों की मृत्यु के समाचार और इस महामारी को रोकने के लिए किये गए उपायों के सम्बन्ध में स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्री का ध्यान दिलाता हूं।

THE MINISTER OF HEALTH AND FAMILY PLANNING (DR. KARAN SINGH) : Sir, In the first quarter of 1973 there was a noticeable increase in the incidence of small pox, particularly in the States of U.P., Bihar, West Bengal and Madhya Pradesh. An intensive small pox eradication campaign was launched in July 1973 in consultation with W.H.O. The main emphasis was on these four endemic States which had been responsible for 94 per cent of the total cases, and the objective of the campaign was to undertake active search of small pox cases followed by containment of the outbreaks. During 1973, 88069 cases with 15,417 deaths were recorded. From 1st January to 14th July, 1974, 1,46,034 small pox cases with 23,095 deaths have been recorded from the various States and Union Territories. 96 per cent of these have been from Bihar, U.P., West Bengal and Assam; Bihar alone accounting for 65 per cent of the cases. The high incidence of small pox in 1974 can be attributed to accumulated backlog of primary vaccination, the lingering superstition among sections of the people against vaccination, and the intensive search which is being carried out throughout the country for unearthing undetected cases.

Under the intensive anti-small pox campaign the State Governments, who are primarily *responsible for the* implementation .of the health programmes, have mobilised health personnel and transport for the case-search operation. The Central Government have taken prompt measures to assist the State Health authorities to meet the current situation. The number of Surveillance Teams headed by senior Epidemiologists has been increased so far to 73 from 22, and containment Teams to 69 as against 15 working last year in the endemic States, in addition to the normal staff of the Small pox Eradication Programme. A number of additional vehicles have also been provided to the teams to ensure mobility. Adequate quantities of vaccine, bifurcated needles and health education material have been supplied and sufficient quantities kept in reserve.

In regard to Bihar, all its 31 districts have been affected. It is estimated that there are about 4,000 active outbreaks. Latest reports, however, indicate that there is a downward trend in the incidence. The number of cases In May were 35,626 with 5,765 deaths, in June 14,971 with 2,679 deaths, and in the first week of July 2,342 with 539 deaths have been recorded. In addition to the normal health staff, 32 special surveillance teams headed by the Senior Epidemiologists and 29 containment teams have been deputed for work in Bihar. 55 Vehicles have been provided by the WHO and 30 vehicles are being sent to Bihar shortly. Adequate stocks of vaccine are being maintained at Patna and Ranchi. In West Bengal from 1st January, 1974, the number of cases reported is 9,322 with 1,783 deaths, and from Assam 4,485 with 647 deaths. I visited Patna personally last week and had discussions with the State authorities. My colleague Prof. A. K. Kisku has visited Orissa, West Bengal and Assam.

I share the deep concern of Hon. Members at the recent spurt in the incidence of small-pox. In a matter like this remedial measures will naturally take time to produce results, but it does appear that the special measures organised have started producing a favourable impact. We have, however, to continue to exercise vigilance and maintain intensity of efforts until the disease is completely under control. I have every hope that it will be possible to reduce the incidence to a great extent in the endemic States in the near future, and also to maintain our target of totally eradicating this terrible disease in the course of the Fifth Plan Period.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : सभापति जी, मैं अपने ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के सम्बन्ध में कुछ भी कहने से पहले कल की बात आपके माध्यम से फिर दोहराना चाहता हूं कि इस सदन की और इस सरकार की भी अभी तक यह परम्परा रही है कि प्रश्न या प्रस्ताव जिस भाषा म हो उसका उत्तर उसी भाषा में होना चाहिए। मैं समझता हूं कि स्वास्थ्य मंत्रालय में इस प्रकार की व्यवस्था होगी और भविष्य में इस बात की ओर ध्यान रखा जाएगा ऐसा मेरा विश्वास है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN : I am told that the difficulty is, the names that appear in the calling attention notices are from different calling attention notices, mostly in English.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : यह सही है प्रायः ऐसा होता है कि जो मूल प्रस्तावक होता है उसका जिस भाषा में प्रस्ताव हो उत्तर उसी भाषा में दिया जाता है।

इस प्रस्ताव के संबंध में जो मैं जानना चाहता हूं वह यह है कि पीछे लोक लेखा समिति ने अपनी एक रिपोर्ट दी थी और अपनी इस रिपोर्ट के अन्दर यह कहा था कि 1962 से जो एक राष्ट्रीय अभियान चेचक के विरोध में प्रारम्भ हुआ था इस देश में और जिस राष्ट्रीय अभियान को फिर पुनर्गठित किया गया था 1969 में, उस में 31 मार्च 1972 तक लगभग 18 करोड़ 84 लाख रुपये व्यय हुए। लेकिन इतनी बड़ी मात्रा में राशि व्यय होने के बाद भी लोक लेखा समिति ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है कि इसके जो सुपरिणाम सामने आने चाहिए थे वे सामने नहीं आए। उसका बहुत बड़ा कारण यह है कि जो प्रारम्भिक स्वास्थ्य संगठन है वह प्रान्तीय सरकारों के साथ और केन्द्रीय सरकार के साथ सहयोग नहीं कर रहे हैं। इसका एक दुष्परिणाम मुझे देखने को मिला मेरे हाथ में समाचार पत्र की एक कतरन है जिसमें यह स्पष्ट लिखा है

"Karan Singh blames Bihar Government for small-pox deaths."

यह स्वास्थ्य मंत्री ने स्वयं इस प्रकार का वक्तव्य दिया है जो एक देश को अधिकृत न्यूज एजेंसी द्वारा प्रसारित हुआ है।

पहली बात में यह जानना चाहता हूं कि जब इतनी बड़ी मात्रा में राशि व्यय हो रही है करोड़ों रुपयों की संख्या में, फिर भी इस प्रकार के आंकड़े स्वास्थ्य मंत्री जी ने प्रस्तुत किए हैं तो मैं जानना चाहता हूं यह दोष कहां है ? या तो केन्द्रीय सरकार अपनी स्वास्थ्य योजनाओं को कार्यान्वित नहीं कर पा रही है या प्रान्तीय सरकारें उसमें सहयोग नहीं दे रही हैं। जो देश इतनी बड़ी मात्रा में धन व्यय कर रहा हो और फिर भी यह संक्रामक रोग व्यापक रूप धारण करता जा रहा है तो इसके लिए कौन दोषी है ?

दूसरी बात मैं यह जानना चाहता हूं कि अभी आपने जो आंकड़े दिए हैं मेरी अपनी जानकारी में वे आंकड़े भिन्न हैं। ऐसा लगता है कि सरकार जानबूझ कर दोषारोपण से बचने के लिए उन तथ्यों को छिपाना चाहती है। बिहार के जो आंकड़ें दिए हैं मेरी अपनी जानकारी में बिहार के अंदर 63 हजार मौतें हो चुकी हैं और आपके अनुसार 23 हजार के आंकड़े बनते हैं। मैं चाहता हूं कि वास्तविकता क्या है आप इसकी फिर से जानकारी दें और इस सदन के सामने दुबारा आंकड़े प्रस्तुत करें। वर्ल्ड हैल्थ आर्गेनाइजेशन के जो कार्यकर्त्ता इस संबंध में आए थे उन्होंने और दूसरे देशों ने जो रिपोर्ट दी है उससे इतना अवश्य प्रतीत होता है कि भारत सरकार को इस प्रकार के संक्रामक रोगों के संबंध में जो सतर्कता बरतनी चाहिए थी वह सतर्कता और सावधानी बरती नहीं जा रही है। इसका परिणाम यह होगा कि जो विश्व संगठन संक्रामक रोगों के रोकने के लिए सहयोग देते हैं अगर सरकार इनकी उपेक्षा करती रही तो भविष्य में उनकी ओर से आने वाले धन पर रोक लगने की भी सम्भावना है।

तीसरी बात जो मैं विशेष रूप से बिहार के संबंध में कहना चाहता हूं वह यह है कि अभी मंत्री महोदय ने कहा मैं स्वयं पटना गया था, और

[श्री प्रकाशवीर शास्त्री]

वहां के स्वास्थ्य मंत्री से और शायद दूसरे अधिकारियों से भी आपने बातचीत की होगी। आपके सहयोगी श्री किस्कू भी उड़ीसा और बंगाल गए थे और इसी के संबंध में गए होंगे। लेकिन जैसा आपने स्वीकार किया है, 60 प्रतिशत मौतें जो हुई हैं वे बिहार के अंदर हुई है। तो क्या इसके भीतर यह कारण तो नहीं है कि बिहार के अंदर आज सरकार ठप्प हो गई है और प्रशासन व्यवस्था भंग हो गई है उसके परिणामस्वरूप आज हैल्थ सेन्टर्स से उसका नियंत्रण बिल्कुल जाता रहा है अगर ऐसी स्थिति है तो केन्द्रीय सरकार जन-साधारण को मौत के मुंह में जाने से बचाने के लिए क्या बिहार को अपने दल विशेष भेज कर कुछ चेचक के विरुद्ध अभियान चलाने का विचार कर रही है? अन्यथा यह समस्या बिहार सरकार के ऊपर छोड़ देना और फिर इस तरह से आंकड़ें सदन में पेश करना, कोई समझदारी की बात नहीं होगी।

बिहार के सम्बन्ध में मेरी अपनी जानकारी है कि वहां पर ज्यादातर जो मौतें हो रही हैं वह वनवासी क्षेत्रों में मौतें हो रही हैं और वह एक ऐसा उपेक्षित वर्ग है जो प्रान्तीय सरकारों की आंखों से भी ओझल है। तो क्या केन्द्रीय सरकार इन आदिवासी और वनवासी क्षेत्रों पर प्रमुख रूप से ध्यान देगी, यह प्रमुख रूप से मैं मंत्री महोदय से जानना चाहूंगा।

डा० कर्ण सिंह : उपसभापति महोदय, पहले तो मैं यह निवेदन कर दूं कि भाषा के संबंध में मेरा तो यह तरीका है कि जिस भाषा में प्रश्न पूछा जाए उसी भाषा में उत्तर देता हूं। लेकिन, जैसा आपने कहा, कालिंग अटेन्शन में बहुत से नाम होते हैं इसलिए अंग्रेजी में उत्तर दिया मुझे तो कोई आपत्ति नहीं है—बल्कि प्रसन्नता होती है—हिंदी में उत्तर देने में. . .

श्री राजनारायण : नहीं, जिसका नाम पहले है वह जिस भाषा में लिखे उसी भाषा में उत्तर दीजिए।

डा० कर्ण सिंह : मैं देखूंगा। अब दो-तीन प्रश्न माननीय सदस्य महोदय ने पूछे। पी०ए०सी० रिपोर्ट जिसका उन्होंने जिक्र किया वह अभी अप्रैल में आई है, 2–3 महीने हुए हैं, और उसमें वही बात उन्होंने कही जो मैंने दूसरे सदन में भी कही, और आज यहां भी कहा कि उसका मूल कारण है कि जो प्राइमरी वैक्सिनेशन होना चाहिए वह हमारे देश में अभी तक पूरा नहीं होता है। जनसंख्या इतनी हो रही है, करोड़ों बच्चे हर साल उत्पन्न होते हैं, जब तक हर एक नागरिक, हर एक बच्चे का वैक्सिनेशन नहीं करवाया जाएगा तब तक यह महामारी दूर नहीं हो सकती है। वैक्सिनेशन करने के लिए वैक्सिनेटर्स हर स्टेट में है लेकिन मुझे यह स्वीकार करना पड़ता है कि जितनी कार्यकुशलता से यह कार्य हो सकता था, पिछले आठ-दस वर्ष में उतना काम नहीं हुआ। किंतु उसके कारण हैं। मैं उस बात पर ज्यादा नहीं जाना चाहता। राज्य सरकारों की भी कुछ दिक्कतें हैं। आज सारे देश में जितने वैक्सिनेटर्स की आवश्यकता है उतने नहीं है। हम जो दे रहे हैं जल्दी से जल्दी उनको भर्ती करो। हमको सोचना पड़ेगा उपसभापति महोदय, कि कोई ऐसा कानून बना दिया जाए कि भारत में जो भी शिशु पैदा हो उसको स्माल-पाक्स के टीके लगाना अनिवार्य हो। इस समय 1888 का ऐक्ट चल रहा है। मैं आश्चर्य में हूं, इतना प्राचीन ऐक्ट भी आज तक हमारे देश में है। 1888 से 1974, 100 वर्ष के करीब हो रहे हैं। अभी इस संबंध में ऐक्ट में परिवर्तन करने की जरूरत है।

श्री राजनारायण : उसको कौन चेन्ज करेगा?

डा० कर्ण सिंह : मैं ही उपस्थित हूंगा आपके सामने। आंकड़ों का जहां तक प्रश्न है, पहले तो मैं यह साफ कह दूं कि हमने जान बूझ कर न कोई आंकड़े छिपाए या गलत आंकड़े दिए मैं प्रश्नकर्ता महोदय से अनुरोध करूंगा, ऐसी हमारी प्रवृत्ति नहीं है जो हमारे पास आंकड़े आए हैं हमने आपके सामने रखे। लेकिन मैं यह

जरूर कह दूं कि अगर मैं दावा करूं कि साहब हमारे आंकड़े बिल्कुल पूरे हैं और इसके अलावा लोग नहीं मरे हैं, तो यह भी मैं नहीं कह सकता, क्योंकि हमारी स्थिति कुछ ऐसी होती है । इसी संबंध में मैं डब्लू एच० ओ० का 1972-73 का पब्लिकेशन है, उसमें से एक सेंटेंस पढ़ दूं—भारतवर्ष के लिए नहीं सारी दुनिया के लिए उन्होंने लिखा है :

"Surveys conducted since 1967 suggest that less than 5 per cent of ail cases are being reported."

आप बताएं, जब डब्ल्यू० एच० ओ० यह कहता है तब मैं यह दावे से ऐसा कैसे कहूं कि इससे ज्यादा नहीं मरे हैं । यह मैं नहीं कह सकता हूं । लेकिन यह मैं दावे से कह सकता हूं कि हमने कोई आंकड़े छिपाने की, घटाने की, कोशिश नहीं की है । जो जो आंकड़े हमारे पास आए हैं वे आपके सामने रखे हैं ।

SHRI MAHAVIR TYAGI (Uttar Pradesh): Less than how much per cent?

डा० कर्ण सिंह : यह तो डब्लू० एच० ओ० ने कहा, 5 परसेन्ट ही केसेज रिपोर्ट होते हैं । इतना बड़ा विस्तृत देश है और बिहार में और दूसरी जगह में बहुत बड़ा आदिवासी क्षेत्र है और जहां जहां हमें यह काम करना है हमें वहां उतना सहयोग नहीं मिलता । तो मैंने यह भी एक कारण बताया कि जब से हमने यह इन्टेन्सिव्ह विलेज टू विलेज सर्च प्रारम्भ किया है, वह भी एक कारण है कि पता चल रहा है कितने लोग मर रहे हैं ?

इससे पहिले मालूम पड़ता है कि कई हजार लोग मरते होंगे । उप-सभापति जी, डब्लू० एच० ओ० से हमारे घनिष्ट सम्बन्ध है और हम उनके आभारी हैं कि उन्होंने हमारी मदद की । आपको आश्चर्य होगा कि तीन चार महीने पहले यहां पर कुछ प्रमुख डाक्टर आये थे और उन्होंने मुझे बड़ी बधाई दी । उन्होंने कहा कि हम तुम को इसलिए बधाई देना चाहते हैं क्योंकि तुमने स्माल-पाक्स केसम्बन्ध में बड़ी कार्य कुशलता से काम किया है । वे अगली बार आयेंगे, तो मैं उनसे हाथ जोड़कर कहूंगा कि साहब आपने मुझे अच्छी बधाई दी है क्योंकि यह जो स्माल-पाक्स है, वह तो बढ़ता ही जला जा रहा है । कहने का मतलब यह है कि डब्लू० एच० ओ० हमारे कार्य से दुखी है ऐसी बात नहीं है । डब्लू० एच० ओ० तो हमारे लिए बहुत अच्छा कार्य कर रहा है और मेरी समझ में हमारे लिए मदद घटाने का उनका कोई विचार नहीं है । हम उनसे पूरा लाभ उठायेंगे ।

आदिवासी क्षेत्र में यह बीमारी बढ़ती जा रही है । मैं इस सम्बन्ध में इन क्षेत्रों के आंकड़े ढूंढने की कोशिश करूंगा कि इन आदिवासी क्षेत्रों में यह बीमारी क्यों बढ़ती जा रही है । इन क्षेत्रों के आंकड़े नहीं मिल पा रहे हैं ताकि हम डिस्ट्रिक्ट वाइज कह सकें कि छोटे नागपुर में इतने केस हुए हैं । लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि यह क्षेत्र बहुत गरीब तबके से भरा हुआ है और यहां पर पिछड़े हुए लोग रहते हैं जिनको प्रारम्भ में वैक्सिनेशन की सुविधा प्राप्त नहीं होती है और बहुत हद तक वही लोग इस बीमारी से मरते हैं । अब हमने अपनी जितनी एडमिनिस्ट्रेटिव्ह मशीनरी है उसको गियर अप कर दी है । राज्य सरकारों की यहां पर अप्रैल में एक मीटिंग हुई थी सेन्ट्रल कौंसिल आफ हैल्थ की और उसमें हमने खासकर के यह प्रस्ताव पास किया था और सब से अनुरोध किया था, राज्य सरकारों से इस सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार भी किया कि चेचक की बीमारी को प्राथमिकता दी जानी चाहिए । मुझे आशा है कि इसमें सब लोग लग जायेंगे । इस कार्य में डब्लू० एच० ओ० भी हमारी मदद कर रहा है । लेकिन यह एक राष्ट्रीय अभियान है और इसमें सब को ही हाथ बंटाना चाहिये ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : बिहार में 60 प्रतिशत मौतें हुईं, लेकिन बिहार का प्रशासन ठप्प पड़ा हुआ है, तो मैं यह जानना चाहता हूं कि केन्द्र की ओर से इस बीमारी को रोकने के लिए दल भेजे जायेंगे ताकि इस रोग पर काबू पाया जा सके ?

डा० कर्ण सिंह : केन्द्र सरकार के उच्च अधिकारी और विशेषज्ञ बिहार गये हैं। कुछ लोग आसाम भी गये हैं और इस तरह से अलग अलग प्रान्तों में लोग बैठे हैं। इस तरह से हमने प्रान्तों में टीमें भेजी हैं। हमने इपिडेमोलोजिकल टीम भेजी है। यह हमने बाहर से भेजी है। इसमें दो प्रकार की टीमें होती हैं। आप मुझे क्षमा कीजियेगा क्योंकि मैं इस चीज को समझाने में सदन का समय ले रहा हूं। लेकिन मैं इस चीज को विस्तार से बतलाना चाहता हूं। एक तो सर्वेलन्स टीम होती है, वह छोटी टीम होती है। जहां जहां यह बीमारी फैली होती है, वह वहां वहां जाती है। एक कटेंमेंट टीम होती है, जिसमें 8–10 डाक्टर होते हैं। इसमें दूसरा पैरा मैडिकल स्टाफ भी होता है। यह टीम उस गांव को एक प्रकार से घेर लेती है और जहां जहां यह बीमारी फैली है, वहां पर लोगों को टीका लगाती है। पहिले वे 30 घरों के इर्द-गिर्द टीके लगाते हैं और फिर उसके बाद सारे गांव में लगाते हैं और इसके बाद दूसरे गांवों में जाते हैं। इस तरह से यह चीज काबू में आ सकेगी। मैं भी अपनी ओर से इस क्षेत्र में गया था।

श्री महावीर त्यागी : इसके टीके का असर कितने वर्षों तक रहता है ?

डा० कर्ण सिंह : तीन-चार वर्ष तक तो रहता है, लेकिन उसके बाद फिर से टीका लगाना चाहिये और बीमारी के लिए फिर से टीका लगाना आवश्यक है। मैं संसद सदस्यों से निवेदन करूंगा कि वे इस बीमारी का टीका अवश्य लगा लें।

SHRI NIREN GHOSH (West Bengal): Sir, there was an old institution. Vaccination Centre, in Calcutta doing yeoman service in this regard not only in Calcutta and Bengal but throughout the country. It had expertise in this regard and now that centre has been disbanded, and the medical expert has been taken away to Delhi and Made a Director, doing nothing. This is one of the things that I want to point out to the Minister.

Then again, Sir, when for so long the WHO was associated with us and helping us, have we been able to develop primary vaccines in our country fully and wholly to meet the needs of the situation? Is it under the control of the Government, or is it under the control of the foreign pharmaceutical companies? If these vaccines are there and they are distributed throughout the country, how could this outbreak, take place? How could so many deaths, in thousands and thousands, take place at all? And it is quite correct. What I want to point out is all the States affected are run by the Congress Party, the Congress Government. It is in their interests to show less figures of this so that they are not accountable to the people. They are so much callous as regards the primary interests of the people in all the States. How can you rely on them when in Bihar they are utilising the military to suppress the people, when in Bengal the Congressmen are killing each other and up till now there is a jungle raj there? Democracy is finished there. How can you expect this Government and this Department under them to pay any attention to smallpox, collect figures, visit villages and so on? Why is it that after so many years adequate number of vaccinators have not yet been appointed? What is the figure you get? Eight thousand. In a vast country like this I fail to understand, even if these 8,000 vaccinators are there, how they can cover this sub-continent. I am at a loss to understand this. The Minister should explain. We cannot understand these things-It is a callous disregard, and the money that should be devoted for this purpose, the care that should be devoted for this purpose, is not being devoted, and unless that is done, this Government cannot do anything. Everywhere this Government is after loaves and fishes and other things. They do not pay any heed to the people's needs and it is the weaker sections of the people, the Adivasis or the Harijans in the hill districts, who suffer; it is they who are neglected; they are completely out of the picture. Perhaps this Government thinks they are not human beings.

DR. KARAN SINGH: On the question of vaccine I am happy to inform the

House that from this year we are fully self-sufficient in the production of vaccine. We have four vaccine institutes: one in UP, one in Karnataka, one in Tamil Nadu and one in Andhra Pradesh. And we produce 156 million doses which is enough ^to cover our requirements. Till last year we were importing vaccine from the Soviet Union. Now we are producing ourselves. It is in the public sector. There is no problem about that. About this particular centre the honourable Member has referred to, my information is that it was making liquid lymph vaccine which was of substandard quality, and now that we have made in our four centres this patent freeze drying vaccine, it was not necessary to continue that centre any longer. Then, I would like to clarify the point which the" honourable Member has raised with regard to vaccinators. The total number of vaccinators that we require in India, we estimate at over 22,000; supervisory staff over 5,000; aid paramedical staff about 750. Out of that 8,400 was the deficiency which, as a result of our urging, has now been reduced to 1.157. There is still a deficiency which is unfortunate. I do not think, if I may submit with gfleat respect to Shri Niren Ghosh, I do not really think this is a party matter at all. I think that to say that the Congress Party is trying to suppress facts or to distort facts is very uncharitable. After all the Congress Party is in power here also and in many States. We are trying our best irrespective of party affiliations. After all when a disease like this hits, it is not going to make a distinction between CPM workers and Congress workers. This is a national problem and I would urge that this should be treated on a national level.

SHRI N. G. GORAY (Maharashtra): I think the honourable Minister will admit that this is a really shameful chapter in (he history of rural medicine in India. Whatever that officer from the WHO might have said to our Minister complimenting him, I suppose it was only a matter of protocol and nothing more than that because so far as the dimensions of this particular problem are concerned, I would like to point out that the head of the Smallpox Division, Mr.

L'B(N)17RSS—6(a)

Donald Anderson, has pointed out that out of 1 lakh 23 thousand smallpox cases or casualties throughout the world, India alone had 1 lakh 3 thousand. Out of this again, Bihar alone has 70,000. That will give you the dimension of the problem. I would like to know from him what sort of primary health assistance is being given to the rural areas in U.P., in Bihar and in Assam. This is an area which has been again described by the World Health Organisation as being the epicentre of Small-pox throughout the world. Fortunately for us throughout the world you find that there are many countries from which this particular scourge has not been completely eliminated. I suppose we have the monopoly of this disease just as we have almost the monopoly of Leprosy, Tuberculosis and other diseases.

I would like to know from the Minister what is being done at the grass roots. I agree with him this is not a question of any Party. Quite true. I would like to draw the attention of the Left parties, Right parties and all other Parties that they should really take this as a challenge because after all why is it that so many people are dying in spite of the fact that we are producing all the vaccine that is necessary. When I made enquiries, I was told that this vaccine which is being produced by our people is as good as any in the world.

DR. KARAN SINGH: Even better.

SHRI N. G. GORAY. Yes it is even better. In spite of the fact that we are spending money on this, in spite of the fact that the World Health Organisation is helping us, and in spite of the fact that the vaccine is so good, why is it that it is not possible for us to eliminate this scourge altogether from States like Bihar, Assam and U.P.? I think what we lack is social consciousness. No political party is trying to make people understand that vaccination is the only remedy so far as smallpox is concerned with the result that ordinary people are not co-operating with vaccinators. There are innumerable cases where the entire population of the village vacates the village or goes away as soon as a vaccinator visits the place because they do not like their children to be vaccinated. This fs the problem facing all of us. We should

[Shri N. G. Goray] accept this challenge. There is no use blaming the Government, if the population vacates the village, or if the vaccinator is stoned or thrown out of the village. 1 think this challenge must be accepted by all of us. We are so much in politics that we do not want to give any attention to these problems which really are causing havoc resulting in 70,000 deaths of children, males, females, adults and so on. It is really a blot on us. Therefore, I would like to ask him why is it that he is not making an appeal, a general appeal, to all the people, especially to the young people that vaccination is not such a difficult operation. If we can recruit 10,000 young boys and train them in vaccination and send them round to villages, I do not think it will be impossible for us to reach the target which we have fixed for this year. We want to eliminate smallpox. That is the aim of World Health Organisation also. If it is possible for us to do this, I suppose it will be possible for us to eliminate this scourge-

DR. KARAN SINGH: 1 entirely agree with the hon. Member when he says that it is a matter for shame. Whereas smallpox is being eradicated from most parts of the world, there are only four countries in the world where it is rampant and in that India has the gravest burden to bear. It is indeed very unfortunate. That is why we have now taken a very firm determination that despite this set back that has occurred as a result of epidemic, we must succeed in removing small-pox. If we do it, it will be the first time in the history of human race that a disease will

be

कोई डिज़ीज आज

completely eradicated.

be the first time and it can be done. The hon. Member is a very senior member and I feel what he has said is very important. It has got to be a national programme and we have got to fight against superstition. He is right vaccinators are sometimes storied and driven out of the village.

SHRI N. G. GORAY: "Sheetal Mata ki Jai". You have to fight against it.

DR. KARAN SINGH: Whatever it is, the point is this: I appeal I did appeal yesterday in the Lok Sabha and today I appeal in the Rajya Sabha here—that all Members of Parliament and all Members of the Legislatures should help us in creating a public opinion. I think he has made a very good suggestion and I would also make a national broadcast on this issue and I would appeal to the people.

Now, you take the Southern States or Punjab or Haryana, for* example. They have done so well that they have totally eradicated smallpox in their States. It is simply in those States where we have not been able to get to the people, where we have not been able to fight the suprestittons of the people and their, obscurantism, that this sort of thing has happened. Now, he has asked one question about the rural areas. The rural areas we are covering through the Primary Health Centres and the Sub-centres. But the vaccinators are supposed to go from village to do their work and that is where the public opinion is required. After all, you are the tribune of the people and you are the representatives of the people, I mean Members of both the Houses, and you should help us. I appealed yesterday in the Lok Sabha and 1 would like to make this appeal again here in the Rajya Sabha and for my part, I would also make an appeal to the nation. I hope we will get the cooperation, full co-operation, from all.

SHRI N\ G. GORAY: Raise a voluntary corps for this-

श्री सवाई सिंह सिसोदिया : श्रीमन्, यह जो ध्यानाकर्षण के सम्बन्ध में प्रश्न है, यह हमारे देश के जनजीवन, जनस्वास्थ्य और राष्ट्र की प्रतिष्ठा से सीधा सम्बन्ध रखता है, इसीलिये मैंने भी पृथक रूप से इस बारे में ध्यानाकर्षण प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। मैं माननीय मंत्री जी का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि सन् 1968 से 1970 तक चेचक की घटनाओं में निरन्तर कमी आती रही और शासन की चुस्ती से ही ऐसा हुआ। लेकिन 1970 के बाद के आंकड़े आप देखेंगे कि मध्य

प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल, इन चारों प्रान्तों में चेचक का रोग बराबर बढ़ता रहा। मुझे आश्चर्य इस बात पर होता है कि सन् 1972–73 में जो लक्ष्य निर्धारित किया गया था टीके लगाने का वह 324 लाख था, उसके मुकाबले में 270 लाख ही टीके लगाये गये। आपको यह भी जानकारी होगी कि 1973 में 80 हजार व्यक्ति इस बीमारी से पीड़ित हुए और 14 हजार आदमियों की मृत्यु हुई। जब इतनी संख्या में आदमियों की मृत्यु हुई तो यह आवश्यक था कि इस घटना के बाद ज्यादा चुस्ती से इस काम को पूरा होना चाहिये था। माननीय मंत्री जी ने कहा कि हम वैक्सीन के मामले में स्वावलम्बी हो चुके हैं। तो फिर कौन से कारण हैं कि समय पर आप टीके लगाने के कार्यक्रम को पूरा नहीं कर सके।

मैं यह भी जानना चाहूंगा कि जैसा आपने कहा कि हम कोशिश कर रहें हैं कि इस रोग पर हम काबू पा सकें, मैं आशा करता हूं कि जिस तत्परता और दक्षता के साथ आप इस महकमें के काम को संभाले हैं तो क्या हम यह आशा करें कि पांचवीं योजना के अन्त तक चेचक से इस देश को मुक्ति दिलाने में आप कामयाबी हासिल कर सकेंगे ?

मैंने यह भी कहा कि राष्ट्र की प्रतिष्ठा से संबंधित यह प्रश्न है। पिछले दिनों मैं संसद के सदस्यों के साथ आस्ट्रेलिया की यात्रा पर गया और मैंने समाचारपत्रों में पढ़ा कि बिहार में लाखों लोगों की इस रोग से मृत्यु हो गई। इससे हमारे राष्ट्र की प्रतिष्ठा को आघात लगता है कि लोगों में यह फैलाया जाय कि गरीबी के कारण ऐसा हो रहा है। इस प्रकार का जो कुत्सित प्रचार राष्ट्र के खिलाफ होता है क्या इस प्रकार की बात आपके नोटिस में है और आपने इसका प्रतिवाद किया या नहीं, इन सारी बातों का उत्तर दें।

मेरे दूसरे साथी और मैं भी इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि यह राष्ट्र के जनजीवन से सम्बंधित प्रश्न है और इसमें सब पार्टियों का सहयोग लिया जाना चाहिये, इस प्रकार की उक्ति आप सोचें और इस पर अमल करें। मैं बिहार के बारे में खास तौर से जानना चाहता हूं—वहां पर जो राजनीतिक विवाद खड़ा हुआ है उसके विस्तार में मैं नहीं जाना चाहता हूं—लेकिन यह अवश्य जानना चाहता हूं कि जो संस्थायें, चाहे सर्वोदय मंडल हो या जो राजनीतिक संगठन वहां उथल-पुथल में लगे हैं तो क्या जनता के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में भी उनको कोई चिन्ता है या नहीं ?

डा० कर्ण सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि हमारी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के ऊपर आंच आती है जब बाहर के लोग अखबारों में यह देखते हैं। आप जानते हैं कि विदेशों में अखबार वाले यह ढूंढते रहते हैं जिससे कि भारत की प्रतिष्ठा के विरुद्ध प्रचार हो सके। अभी जो उन्होंने प्रतिवाद की बात कही है, यह हो सकता है कि हम इस रोग पर काबू पा लें। मैं वहां के लोगों से मिला हूं और प्रैस वालों से भी मिला हूं। क्योंकि यह प्रजातांत्रिक देश है इसमें हम किसी को रोक नहीं सकते। मैं बिहार गया . . .

श्री ओ३म् प्रकाश त्यागी : हमारी एम्बेसी ने खंडन किया या नहीं ?

डा० कर्ण सिंह : जब लोग मर रहे हैं तो खंडन क्या होगा। बढ़ा-चढ़ा कर जो लोग आंकड़े देते हैं उसका हम खंडन करते हैं। लेकिन में यह अर्ज करना चाहता हूं कि वास्तव में इसका खंडन तभी होगा जब हम इस रोग पर काबू पाएंगे। सिसोदिया जी ने यह कहा कि जब से यह रोग बढ़ा उसके बाद से हमने क्या किया ? मेरे मूल वक्तव्य को देखेंगे तो आप पायेंगे मैंने उसमें लिखा है कि जुलाई 1973 से, एक वर्ष पहले से जहां हमें दिखा कि यह रोग बढ़ रहा है उस वक्त से हमने यह इन्टेंसिव कम्पेन आरम्भ किया। क्योंकि अगर एक दम रोग बढ़ जाए तो उसको रोकना बड़ा मुश्किल है।

[डा० कर्ण सिंह]

, सलिये हमारी यह टू प्रोंजड स्ट्रेटेजी है। एक तो जहां आउट ब्रेक हुआ है वहां के लोग वैक्सीनेशन करवा लें और जहां जिन लोगों का वैक्सीनशन नहीं हुआ है उनके लिये वैक्सीनेशन की बात सारे देश में फैलाई। अगर हम इस को बन्द कर दें तो बहुत सारे लोग अन-वैक्सीनेटिड रह जाते हैं। जब चारों ओर इस प्रकार की स्थिति है तो जब तक हम दोनों चीजें नहीं करेंगे हम आगे नहीं बढ़ सकते।

सिसोदिया जी मध्य प्रदेश से आते हैं। मध्य प्रदेश सरकार को बधाई देना चाहता हूं क्योंकि पिछले वर्ष इन्होंने बहुत काम किया है, वैक्सीनेशन किया है। इसमें बड़ी सरल बात है जो टीके ज्यादा लगवाएगा वह राज्य बचेगा और जो राज्य टीके नहीं लगवाएगा उसके लोग मरेंगे। इसलिए हम यह कह सकते हैं, टीके लगवाएं। इसलिये वैक्सीनेशन मुफ्त किया है।

हमारा जो पब्लिक डिविजन है जो मिनिस्टरी आफ एक्सटरनल आफेयर्स का है उसके द्वारा विदेश में हमारी जो एम्बेसीज हैं उनको हमने कहा है कि इस प्रकार की इनफ्लेटिड, डिस्टोर्टिड पिक्चर नहीं होनी चाहिये।

मैं बिहार की राजनीति के संबंध में कुछ नहीं कहना चाहता हूं क्योंकि मुझे यह बताया गया है कि बिहार शिक्षित संघ इस वैक्सीनेशन के काम में हाथ बटा रहा है।

श्री महावीर त्यागी : मुझे माफ करें मैं एक बात कहना चाहता हूं वह यह कि आप कोई ऐसा तरीका निकाल सकतें हैं जिससे वैक्सीनेशन लगाने वालों की ट्रेनिंग के वास्ते गांव के लोग गांव के वालियंटर्स इक्ट्ठे किये जाएं ?

डा० कर्ण सिंह : मैं समझता हूं इसके लिये कोई विशेष ट्रेनिंग की आवश्यकता नहीं है। वैसे हम यह चाहते हैं ब्लाक पंचायत में सरपंचों को यह अधिकार दे दें कि वे कम से कम अपनी पंचायतों में यह चीज लागू करवाएं ताकि हम को वालंनटियर्स की आवश्यकता न हो।

श्री राजनारायण : आपकी जो फैमिलि प्लानिंग है उसके बारे में मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या आप को इस बात की जानकारी हुई है कि चारों तरफ उत्तर प्रदेश के पूर्वी इलाकों में और बिहार में फैमिली प्लानिंग के बारे में जहां यह लिखा हुआ है कि :

दो सुत सुन्दर सीता जाये।
लव, कुश वेद पुरातन गाये ॥

वहां यह लिख दिया गया है कि :

दो सुत सुन्दर इंदिरा जाये।
राजीव, संजय चेचक लाये ॥

डा० कर्ण सिंह : मेरी विनम्र प्रार्थना यह है कि इस प्रकार से किसी व्यक्ति का नाम लेना अनुचित है। यह जरूर है कि जब फेमिली प्लानिंग विषय पर बात होगी तो . . .

श्री राजनारायण : चेचक की महामारी के बारे में मैं कह रहा हूं। उत्तर प्रदेश के पूर्वी इलाके में और बिहार में यह लिखकर फैलाया हुआ है। दो सुत सुन्दर सीता जाये, लव कुश वेद पुरातन गाये। इसके नीचे जनता ने अपनी तरफ से यह लिख दिया है कि "दो सुत सुन्दर इन्दिरा, जाये, राजीव, संजय चेचक लाये।"

डा० कर्ण सिंह : कोई गलत बात, अनुचित बात लिख दे तो मैं क्या कह सकता हूं। लेकिन प्रश्न फैमिली प्लानिंग के जो वेतन भोगी कर्मचारी हैं उनके उपयोग का है। हम उनका उपयोग भी इस स्मालपोक्स कैम्पेन में ले रहें हैं।

श्री सीताराम सिंह : श्रीमन् जहां तक चेचक का सवाल है विश्व संघ स्वास्थ्य की रिपोर्ट के मुताबिक जितने लोग दुनिया में मरते हैं उनमें 83 फीसदी लोग भारत में चेचक से मरते है। और उसमें भी विशेष तौर पर बिहार, उत्तर प्रदेश और बंगाल में मरते हैं। 63 फी सदी तो सिर्फ बिहार में ही मौतें हुई है। यह बहुत दुख:द घटना है और 27 साल की आजादी के बाद और जनप्रिय सरकार की देखरेख म

यह काम हो रहा है—इससे यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि हमारे देश में क्या प्रगति हो रही है और क्यों बिहार में, उत्तर प्रदश में और बंगाल में ज्यादा लोग मरते हैं। इसका साफ कारण यह है कि उनको पौष्टिक खाना नहीं मिलता है, अल्प भोजन मिलता है, रहने के लिए वे गन्दी बस्तियों में रहते है, घर रहने के लिए उनके पास नहीं है और उनके लिए सफाई का कोई इन्तजाम नहीं है। इसलिए हम तो मंत्री जी से चाहेंगे कि वे इसकी जांच करवायें और यह देखें कि इन मौतों में जो बिहार, उत्तर प्रदेश और बंगाल में हुई है, उसमें कितने आदिवासी है कितने हरिजन है, और कितने पिछड़े लोग है।

श्रीमन्, जहां तक सवाल बिहार की सरकार का है मैं समझता हूं कि बिहार में सरकार नाम की कोई चीज नहीं है। चाहे लोग चेचक से मरें भूखमरी से मरें, उन्हें बचाने वाला कोई नहीं है, ऐसी स्थिति में जो सरकार जनता को मौत से न बचाये, भ्रष्टाचार को न रोक पाये, ऐसी सरकार को बने रहने का क्या औचित्य है? हम तो विशष तौर में कहना चाहेंगे और यह हमारा आरोप है कि बिहार में और अन्य स्थानों में जो लोग चेचक से मरे हैं उसमें केन्द्रीय सरकार दोषी है। मैं जानता हूं, कि बिहार में 18 मार्च से जन आन्दोलन चल रहा है और बिहार के प्रत्येक जिले में फौज और पुलिस ही नजर आती है। चाहे विश्वविद्यालय हो या कालेज हो, हर जगह पुलिस और फौज ही नजर आती है। यह सरकार तो अपनी कुर्सी बचाने म लगी हुई है। जनता को कौन देखता है, जनता तो मर रही है। इस सरकार को जनता का कोई फिक्र नहीं है, इसलिए मैं चाहता हूँ कि इसकी पूरी जांच हो और जल्द से जल्द बिहार की सरकार को खत्म किया जाय। यह नालायक सरकार है, पाजी सरकार है और यह सरकार जनता को मौत से नहीं बचा रही है, भूखमरी से नहीं बचा रही है न ही जनता को कोई रोजगार दिला रहीं है। इसलिए मैं चाहूंगा कि जल्द से जल्द इस सरकार को खत्म कर दिया जाय।

एक बात और कहना चाहता हूं।

श्री महावीर त्यागी : सरकार को पाजी नहीं कहना चाहिए।

श्री सीताराम सिंह : एक श्री अश्विनी कुमार चौबे जेल में है। उन्हें लोहे की छड़ों से दागा गया है और तंग किया जा रहा है। कई दिनों तक तो उनको बेहोशी रही है। (**अन्तर्बाधाएं**) बिहार का जेल नाजी कैम्प बन गया है।

श्री उप-सभापति : यह तो चेचक का मामला है। इससे इसका ताल्लुक नहीं है।

श्री चन्द्रमणि लाल चौधरी : जहां तक मुझे मालूम है, जो सरकार के खिलाफ एलीमेन्टस है उनका यह काम है और वे ही बिहार के बारे में ऐसा कहते हैं। मुझे मालूम है, मुजफ्फरपुर और दरभंगा में चेचक से मौत नहीं हुई है। तो दो चार अगर हुई भी हैं तो इतनी नहीं हुई हैं।

डा० कर्ण सिंह : माननीय सदस्य ने जो बातें कहीं उनमें एक बात से तो मैं उनसे सहमत हूं कि जहां तक पौष्टिक खाना और रहने के लिए मकान देने का प्रश्न है, इसमें कोई शक नहीं कि बीमारी नहीं बढ़ती है जहां गरीबी हो, रहने की ठीक व्यवस्था न हो और जहां पर लोगों को पौष्टिक भोजन न मिले। इसम भी कोई शक नहीं कि जब तक हम इन बातों की तरफ विशेष ध्यान नहीं देंगे तब तक इन बीमारियों से छुटकारा पाना कठिन होगा।

दूसरी बात बिहार सरकार के बारे में कही गई। इस वक्त में इस प्रश्न में नहीं जाना चाहता, लेकिन यह कहना चाहता हूं कि जितनी शक्ति वहां पर आन्दोलन चलाने पर लगाई जा रही है, अगर उस शक्ति को चेचक के विरुद्ध अभियान में लगाया जाता तो शायद लोगों को अधिक लाभ होता, जनता को अधिक लाभ होता। आन्दोलन करने वालों की बात कर रहे हैं, आंदोलन से उत्पन्न कठिनाई की बात नहीं कर रहे हैं।

श्री गुणानन्द ठाकुर (बिहार) : उपसभापति जी यह बात सत्य है और माननीय मंत्री जी ने भी इसे कबूल किया है कि बिहार जैसे पिछड़े सूबे में चेचक, हैजा, बच्चों में डिप्थेरिया और उसके साथ साथ मलेरिया, ये तीन-चार बीमारियां ऐसी हैं जो बुरी तरह से फैल रही है और फली है, जिसके संबंध में हमारे स्वास्थ्य मंत्री जी ने कबूल किया और चेचक के संबंध में सदन को आश्वाशन भी दिया है कि हम इसको हटाएंगे, दूर करेंगे। आज प्रश्न यह है कि यह जो मिलावट की बात हो गई है, अब तो लोगों में यह डर फैलने लगा है कि ग्लूकोज में जैसी मिलावट हो गई है उसके चलते यू० पी० में कितने मरे या बिहार में भी कई लोग मरे, और जो ट्रेन्ड लोगों में उस संबंध में हो गया है उसके बारे में गोरे साहब ने कहा। पहले बिहार में पचोनिया कम्योनिटी के कुछ लोग ही होते थे जो वैक्सीनेशन लगाते थे, गांव गांव में घूम कर। अब पढ़े लिखे लोग टीका लगाया करते हैं। मैं माननीय मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा : राजनैतिक दलों से अपील करें, विद्यार्थियों से अपील करें, युवकों से अपील करें, जो बेकार नौजवान बैठें है उनसे आग्रह करें, सबों से सहयोग मांगे इस सवाल पर। वहां जो पचोनिया कम्युनिटी कहलाती है, वह उत्तर भारत में बहुत है . . .

श्री रबी राय (उड़ीसा) : उनकी कितनी तादाद है ?

श्री गुणानन्द ठाकुर : काफी है। वे बहुत गरीब और बैक्वर्ड होते है। गांव गांव में, दरभंगा में सहरसा में और जगहों में घूम घूम कर वे पहले यही काम करते थे। तो मैं मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि उन लोगों का भी कोआपरेशन लें, उसमें कुछ उन लोगों से काम लें।

दूसरी बात यह है कि जिस प्रखण्ड में मैं रहता हूं बिहार के—बिहार में अभी बाढ़ की समस्या है, अब बाढ़ के समय इतना मलेरिया और हैजा फैलेगा, इतना गंदा पानी लोगों को पीने को मिलेगा ऐसे में कुछ मोबाईल अस्पताल का प्रबंध उनके वास्ते कीजिए जिससे गांव गांव में दस-दस, बीस-बीस हजार की आबादी पर, एक एक पंचायत क्षेत्र पर लोगों की रक्षा हो सके उनका इलाज हो सके। यह बेसिक चीज है। मैं चाहूंगा, माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य् मंत्री इस संबंध में बहुत थ्योरिली इन्वेस्टिगेट करें। लोग हंसते हैं हमारे ऊपर—मच्छर को तुम लोग मार नहीं पाते हो। मच्छर को तुम क्यों नहीं हटा पाते ? इतने मच्छर हैं अमीर को, गरीब को सभी को कष्ट होता है। बिना मसहरी नहीं सो सकते। बेसिकली मच्छर को भी खत्म कीजिए मच्छरों के चलते भी मलेरिया और तरह तरह की बीमारियां फैलती है। इसलिए आप उन बीमारियों को दूर करने के लिए कुछ मच्छरों का इलाज कीजिए खास कर आप जानते हैं इस दिशा में बिहार सबसे पिछड़ा सूबा है, मरा हुआ सूबा है, हर दृष्टिकोण से अभी पीछे है। इसलिए मैं माननीय मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि उसकी तरफ ध्यान दें। आप बड़े बुद्धीमान, समर्थवान और बड़े अच्छे स्वास्थ्य् मंत्री हैं, समस्या की गहराई में जाते हैं, कृपा करके बिहार के अस्पतालों में कम से कम दवा तो मिल सके और चेचक, कालरा और डिप्थेरिया के लिए इस तरह का बंदोबस्त हो कि हर 10,000 की आबादी के क्षेत्र म एक सेंटर खोल सकें तो बड़ी अच्छी बात हो। हमारा एक बार्डर स्टेट है, हमारे साथ नेपाल का बार्डर है, बंगलादेश का बार्डर है और सिक्किम बार्डर में आता है और इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि यह एक अन्तराष्ट्रीय जगह हो गई है। इस क्षेत्र में बड़े गरीब लोग रहते है और गरीब लोगों के ऊपर यह बीमारी अधिक फैल जाती है, लेकिन उनके दवादारू का कोई प्रबंध नहीं होता है। मैं मंत्री से चाहूंगा कि वे इस संबंध में सब दलों का एक विशेष सम्मेलन बुलायें और इस बारे में उनकी सहायता मांगें। जो दल सहायता नहीं देगा उसका परदाफाश हो जायेगा क्योंकि इन पार्टियों का कार्य तो सरकार की निन्दा करना ही होता है। यह तो एक पवित्र ौर मानवता का कार्य है जिसमें हर एक पार्टी को सहयोग करना चाहिये। पहला उद्देश्य तो हर एक का जनता को कष्ट से

बचाना ह ना चाहिये ग्रौर इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि इस संबंध में एक सर्वदलीय सम्मेलन बुलाया जाना चाहिये ग्रौर उनकी इस बारे में सहायता मांगी जानी चाहिये। हम लोग इस सम्बन्ध में एक सप्ताह मनावें जिसमें सभी पार्टी के लोग बैठकर उसका कार्यक्रम तैयार करें। इसमें जनता को समझाया जाये कि यह दलगत का मामला नहीं है। इसमें तो सब का सहयोग लेना ग्रौर करना ग्रावश्यक है क्योंकि इससे जनता को ही फायदा पहुंचने वाला है। मैं मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि केन्द्र के मंत्री बिहार में जगह जगह पर जायें। मैं इस बारे में कई लोगों से मिल चुका हूं। यह बात सत्य है कि मुंगेर, भागलपुर, सहर्सा ग्रौर सन्थाल परगना में जहाँ भी गया हूं वहां के विधायक ग्रौर लोगों से मिला ग्रौर उन लोगों ने बताया है कि वहाँ पर काफी लोग मरे हैं। मैं चाहूंगा कि वहां पर केन्द्रीय ग्रौर राज्य मंत्री जायें। मैं डा० कर्णसिंह से भी प्रार्थना करूंगा कि वे कम से कम एक जिले के हैडक्वाटर में जायें ग्रौर वहां पर लोगों तथा ग्रधिकारियों को बुलाकर एक बैठक करें। इससे जनता में उत्साह ग्रायेगा ग्रौर इस बीमारी तथा कलंक को हमेशा के लिए हम मिलकर ही मिटा सकते हैं।

डा० कर्ण सिंह : उप-सभापति जी, माननीय सदस्य ने कोई विशेष स्पष्टीकरण नहीं पूछा है बल्कि उन्होंने कछ सुझाव दिये हैं जिन पर विचार किया जा सकता है। उन्होंने ग्रपने प्रश्न में जिस कम्युनिटी का जिक्र किया है, उसके सम्बन्ध में मुझे कोई जानकारी नहीं है, लेकिन हमारा जनरल एप्रोच यह रहता है कि जो ग्रादिवासी क्षेत्र है, उसमें वहां के लोगों को ग्रधिक से ग्रधिक संख्या में टीका लगाया जाय। मैं समझता हूं कि इस चीज से वहां के लोगों को ज्यादा फायदा हो सकता है। इसी प्रकार हम चाहते हैं कि सभी कम्युनिटी के लोग इसमें ग्रायें।

जहां तक राउन्ड टेबल कांफ्रेस की बात है, हम इस बात को महसूस करते हैं कि इस में सब दल सहायता करें, सारे कर्मचारी, स्कूल टीचर, प्राईमरी हैल्थ सेन्टर के जो कर्मचारी हैं ग्रौर सब सेन्टरों के जो कर्मचारी है, तथा जो ग्रौर कर्मचारी हैं, वे सब इस तरह से मदद करे कि यह ग्रभियान सफल हो सके। इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार के उच्च ग्रधिकारी तथा विशेषज्ञ उन क्षेत्रों में गये हैं जहां पर यह बीमारी फैली हुई है ग्रौर इस तरह का प्रबन्ध कर रहें हैं ताकि यह बीमारी बढ़ने न पाये। मैं सदन को ग्रौर मेंम्बरों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार की ग्रोर से कोई भी कसर उठा नहीं रखी जायेगी ग्रौर जो भी सहायता, जो भी विशेषज्ञ इस कार्य के लिये ग्रावश्यक होंगें, वह दी जायेंगी ग्रौर हम इस काम के लिए दे भी रहे हैं। हम चाहते हैं कि यह कार्य राष्ट्रीयस्तर पर किया जाय ताकि जो धब्बा हमारे देश के ऊपर है वह मिट जाय ग्रौर सारे संसार से चेचक समाप्त हो जाय। मेरी यही ग्राशा है कि हम इस धब्बे को धोने में ग्रन्त में सफल हो जायेंगे।

OBJECTION TO GOVERNMENT STATEMENT ON INDIA-SRI LANKA AGREEMENT ON BOUNDARY IN HISTORIC WATERS BETWEEN THE TWO COUNTRIES

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Surendra Pal Singh will now make a statement.

SHRI NIREN GHOSH (West Bengal): On a point of order.

SHRI RABI RAY (Orissa): There is a point of order.

SHRI S. S. MARISWAMY (Tamil Nadu): On a point of order.

SHRI B. S. SHEKHAWAT (Madhya Pradesh): On a point of order. *(Interruptions).*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, where is the point of order. Please take your seats.

SHRI NIREN GHOSH: You hear the point of order.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let him make the statement.